युवाओं का आह्वान

मेरे प्रिय युवा भाईयों स्वस्थ तन, स्वच्छ मन, अपार ऊर्जा, विराट इरादे, नवीन विचार धारायें, अदम्य साहस, प्रबल पुरूषार्थ की ललक, दृष्टि में लक्ष्य की चमक, बेजोड़ प्रतिभा लेकर भी आप क्या कर रहे हो? क्या संसार से दुख दर्द सब खत्म हो गया है? या आपको दिखाई नहीं देता या देखकर भी अनदेखा कर रहे हो या माया की चकाचौंध आपको अपने चंगुल में फसां रही है? मेरे युवा भाईयों सब कुछ तो आपके पास है बुलंद हौसले, सितारों को छूने की तमन्ना, आसमान पर चढ़ने का इरादा, हवाओं को दिशा देने की ताकत, तूफानों का रूख मोड़ देने का साहस, खतरों से खेलने की हिम्मत, सागर की थाह लेने का जज्बा, मंजिल को प्राप्त करने की अटूट लगन, कुछ कर दिखाने का जजबा, कठोर श्रम, मर मिटने का व कुछ कर गुजरने का जुनून क्या ये सब एक युवा के अलावा किसी और से संभव हुआ या हो सकता है?

मेरे भाईयों ये सब स्वर्णिम अवसर मात्र कुछ वर्षो के ही होते हैं और उसमें आपको वह सब सम्भव कर दिखाना है जो अब सबके लिए असंभव लगने लगा है परन्तु स्वर्ण को सोना भी कहा जाता है। दिनों दिन हालात बिगड़ते जा रहे हैं और तुम लोग या तो सोने (Gold) को प्राप्त करने की प्रक्रिया में लगे हो या फिर सोने (Sleep) में लगे हो। मेरे भाईयों आप यहाँ तक पहुँच कर जब तुम्हारे पास अपार ऊर्जा, निर्मल मन, जाग्रत विवेक, भगवान की मदद, समाज की अपेक्षाएं, परिस्थितियों का प्रकोप एवं चेतावनी, समय की मांग, परिवार का सहयोग सामने है, तब तुम इस चौराहे तक आकर ठहर क्यों गये हो? चन्द्रशेखर आजाद से जब उनके मित्रों ने कई बार उनके बूढ़े माँ बाप का पता पूछा ताकि उन्हें कुछ मदद के लिए हर मास रूपये भेज दें तो आजाद ने वे रूपये इस आश्वासन के साथ ले लिए कि वह खुद ही भेज देगें पर कुछ दिनों के बाद भी रूपये न भेजने का कारण विद्यार्थी ने जब उनसे पूछा तो उन्होंने बड़ी भावना से कहा कि मेरे देश में जितने भी वृद्ध हैं वे सब मेरे माता पिता हैं उन्हें सुखी व स्वतंत्र करना न सिर्फ मेरी जिम्मेवारी है बल्कि मेरा फर्ज है और यह रूपये उसी कार्य में खर्च हो गये हैं। ऐसी थी क्रान्तिकारियों की सेवा भावना उन्होनें अपने को किसी हद में नहीं बांधा, सारा देश अपना है जो भी करना है, सारे देश के हित को ध्यान में रखकर करना है और आप लोग जिन्हें बेहद के पिता से बेहद विश्व परिवार का ज्ञान मिला फिर भी सिर्फ अपने भविष्य के बारे में सोच–सोच कर अपनी सारी शक्तियाँ लगा रहे हो। जब रामकृष्ण परमहंस जी ने विवेकानन्द का आह्वान किया तो उनके सामने उनकी माँ व उनसे छोटे भाई बहन थे जिनके जीवन निर्वाह की जिम्मेवारी उन्हीं के ऊपर थी। उनके सामने दोनों ही रास्ते अनिवार्य लग रहे थे पर निर्णय एक तरफ का ही हो सकता था। इसलिए असमंजस में वे तीन दिन तक दुखी रहे फिर बड़ी दृढ़ता के साथ अपनी संकुचित मानसिकता पर विजय प्राप्त कर लिया और निकल पड़े विश्व विजयी अभियान पर। उन्होनें सोचा कि अगर मैंने घर में रहकर इनकी जिम्मेवारी ली तो जिन्दगी भर में सिर्फ इनका ही कल्याण कर पाउंगा।

दूसरी बात अगर भूख के कारण इन तीन लोगों ने शरीर भी छोड़ दिया तो हमारे देश की ऐसी हालत है जहॉ गुलामी, बेकारी व सामाजिक कुरीतियों से न जाने कितने लोग रोज मर रहे हैं। मुझे भारत की सेवा के लिए ही निकलना उचित हैं और वे निकल पड़े पारिवारिक व मानसिक बन्धनों को तोड़ कर। क्या तुम्हें अपनी जिम्मेवारियों का कोई एहसास नही? क्या तुम्हें इस मिट जाने वाली दुनिया से इतना मोह हो गया है जो हाथ पर हाथ रखकर बैठ गये हो। क्या तुम्हें भारत माँ की गुलामी का कोई फिक्र नहीं? अरे भाई सोने की चिड़िया भारत का ऐसा हाल देखकर भी तुम्हें कोई संकल्प नहीं उठता? चन्द्रशेखर आजाद देश सेवा के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार

थे तो क्या तुम अपनी छोटी–छोटी इच्छाओं के पीछे ही घूमते रहोगे? या पारिवारिक जिम्मेवारियों का बहाना करके अपने आपको ही ठगते रहोगे। 2500 वर्ष से माया रावण की गुलामी से भारत माँ की आँखों में जरा देखो क्या दृश्य सामने हैं? देखो जहाँ तक तुम देख सकते हो – बीमार, गरीब, विकलाँग, लाचार, दुखी, हताश निराश, जिन्दगी से परेशान बेबस लोग, अपनों के सताये, अस्पतालों की बढ़ती भीड़ क्या इन्हें देखकर आपको कुछ भी नहीं हो रहा, क्या इन्हें ऐसी चिन्तित हालत में छोड़कर आप भाग सकते हो? क्या आपके मजबूत कंधे इनका बोझ नहीं उठा सकते?

अब जरा दूसरा दृश्य देखों – बेबस गरीब बच्चे खाने–खेलने की उम्र में खाना बनाते, बर्तन धोते, खाना खिलाते, चाय की दुकानों पर, अमीर घरों में कैद, उनकी कोठी की शान बढ़ाते बच्चे, फुट पाथों एवं स्टेशनों पर बोतलें बीनते बच्चे, फटी बोरियां ओढ़कर माँ की ओट में दुबक कर बैठे बच्चे, अपने सोने के देश भारत में फटेहाल नौनिहालों की पैबंद लगी जिन्दगी पर क्या आपको कोई तरस नहीं आता? अरे मेरे भाई कुछ तो सोचो कुछ तो करो इन मासूम धरोहर को बचाने के लिए।

अब तीसरा दृश्य देखो, इन नव जवानों को जिनको अपनी ही खबर नहीं, अपना ही होश नहीं क्या करने चले थे, क्या करने लगे हैं। कहाँ जाना था, कहाँ जा रहे हैं? क्या करना चाहिये था? क्या कर रहे है? कुछ पता नहीं। माँ बाप की गाढ़ी कमाई का पैसा नशे में उड़ाकर बर्बाद कर रहे, न सिर्फ पैसा बर्बाद कर रहे हैं पर खत्म कर रहे हैं अपना अनमोल जीवन जो बहुतों की बहुत मेहनत के बाद इस मुकाम तक पहुँच पाया था लेकिन वे इसमें आग फैला रहे हैं, समाज में बुराईयों का कहर दे रहे हैं, बीमारियों का घुन घोल रहे हैं वायुमण्डल में पतन का जहर बढ़ा रहे हैं, अपराधियों की भीड़ पैदा कर रहे हैं, हैवानियत का आतंक, कर रहे हैं, दिलों में दहशत, हर मन में कपट शुरू कर रहे हैं, इंसानियत मानवता की विनाश लीला बढ़ा रहे हैं नित नये दंगा फसाद। मेरे भाईयों इस महामारी को कौन रोकेगा? क्या तुम्हें इनकी मूर्खता व बेबसी पर रहम नहीं आता? आखिर आप क्या सोच रहे हो? कहीं ये सब देखकर तुम भी तो दिलशिकस्त नहीं हो रहे हो। नहीं, अभी वो समय नहीं कि आप जैसे लोग भी ध ाराशायी हो जायें।

अभी चौथा दृश्य देखो ये वो नजारा है जिनको देखकर संसार चलता था, दूसरों का विवेक जाग्रत करने वाले आज अपने विवेक को भौतिकता की चकाचौंध में आकर क्षणिक सुख साधनों पर गिरवी रख समाज व अपने आपको धोखे में डालकर भारत माँ को कलंकित कर रहे हैं। एक तरफ राजनीति दूसरी तरफ धर्मनीति अब दोनों ही सिद्धान्तहीन हो लक्ष्य के बिना ही चल रहे हैं जिसके कारण बढ़ती मारामारी, भ्रष्टाचार, चुनावी दंगल के कारण बढ़ती मंहगाई, शासन सत्ता की लालसा की आग अब ये राष्ट्रव्यापी समस्या हो गयी है। नित नई बनती सरकारें, बदलते कानून, क्या इस विकराल समस्या का समाधान आपके सिवाए है किसी के पास? पर आपने कभी इस फैलती आग पर पानी छिड़कने के लिए सोचा? मेरे भाई क्या ये समस्त मानवता के दुख दर्द आपको दिखाई नहीं देते या दिखाई देने के बावजूद किसी की करूण दुर्दशा पर आपकी मनोदशा हलचल में नहीं आती? आखिर आपके फौलादी बाजुओं में जोश कब आयेगा? आपका गर्म खून दिनों दिन ठंडा क्यों होता जा रहा है? या आप अभी कुछ और देखना चाहते हैं? आपको मानवता की चीत्कार, माया की चुनौती, प्रकृति की चेतावनी दिखाई व सुनाई क्यों नहीं पड़ती? आप जैसे प्रबल पुरूषार्थी, अति आत्म–विश्वासी दृढ़ निश्चयी, हिम्मतवानों का रास्ता चट्टानों की तरह रोककर कहीं माया अपने चम्बे में तो नहीं फँसा रही? भाईयों माया रावण दुश्मन के रूप में नहीं साधु के रूप में आता है। सोने के हिरन के रूप में माया आती है। क्या आपकी परख शक्ति इतनी ढीली हो गयी है। भाईयों अगर आपकी बुद्धि सांसारिक बातों में लगने लगी है या धन के पीछे आकर रूक गये हो तो मेरे भाई ये पैसा बहुत कुछ है पर सब कुछ नहीं। अगर भगत सिंह, सुभाषचन्द्र बोस, गाँधी जी, बाल गंगाधर तिलक ये सब धन के पीछे भागते तो भारत आज इस हालत में होता क्या?

या पैसा सब सुख देता तो राजा भृतहरि, राजा गोपीचन्द, सिद्धार्थ (महात्मा बुद्ध) ने अपना राज्य न छोड़ा होता, मेरे भाईयो आपका जन्म इतने छोटे उद्देश्य के लिए नहीं हुआ है। तुम लाखों करोड़ों मनुष्यों की जीवन नैया पार लगा सकते हों, पर तुम कहाँ फँसते जा रहे हो और क्यों उलझकर और उलझते जा रहे हो? तुम्हारी मंजिल ये नहीं। तुम्हारा लक्ष्य इतना छोटा क्यों? तुम इतनी जल्दी घुटने क्यों टेकने लगते हो? तुम सर्वशक्तिवान की सन्तान मास्टर सर्वशक्तिवान हो। तुम अपार ऊर्जा के धनी हो तुम्हें तो आगे बहुत विकराल परिस्थितियों का सामना करना होगा। तुम एक बहादुर सैनिक हो, भगवान ने तुम पर विश्वास किया है। तुम इतनी जल्दी इतनी छोटी–छोटी परिस्थितियों में क्यों घबरा जाते हो? सैनिक तो युद्ध से नहीं घबराता। तो फिर छोटी छोटी परीक्षायें भला क्या हैं? हमने एक बार पढ़ा था कि चींटी हाथी को मार देती है पर आश्चर्य कहाँ हाथी कहाँ चीटीं, अगर हाथी सिर्फ उसके ऊपर अपना पैर ही रख दे तो चींटी का कुछ भी अता पता नहीं लगेगा। पर शायद हाथी यह कोशिश ही नहीं करता, कहीं आप भी तो ऐसा नहीं कर रहे हो? भगवान के बच्चे होकर भी अगर आप ऐसे ही निश्चिन्त व आराम पसन्द रहे तो दुनिया का क्या होगा? अगर अभी आपने कुछ नहीं किया तो ये स्वर्णिम अवसर आपके हाथ से निकल जायेगा और आप फिर करेगें कब? जब भ्रष्टाचार, अनैतिकता लाइलाज हो चुका होगा क्या तब करोगे? नहीं तुम इतने स्वार्थी नहीं हो सकते जो सिर्फ अपने लिए सोचों, तुम्हें तो दूसरों को जीवन दान देते, जीवन बनाने के लिए जीना है, पैसे से जीवन नहीं बनता। ब्रह्मा बाबा, दादी प्रकाशमणि, दादी जानकी, दादी गुलजार, जगदीश भाई जी जैसे लोग पैसे से नहीं बने न ही मदर टेरेसा, गाँधी, विवेकानंद, चन्द्रशेखर आजाद पैसे से बनाये जा सकते हैं। मेरे भाइयों अभी भगवान आपको आफर कर रहा हैं, समय भी आपके इन्तजार में खड़ा हैं। लोगों की नजर आप पर ही है फिर क्यों चुपचाप शान्त बैठे हो, उठकर खड़े हो जाओं और तोड़ दो समाज की जंजीरों को, मन के बन्धनों को फेंक दो आलस्य अलबेलेपन की चादर को और ठान लो अपने मन में कि जब तक संसार से दु.ख दर्द की छुट्टी न की तब तक चैन से नहीं बैठेगें। किसी भी बुराई का अंश दुनिया के किसी भी कोने में जब तक रहेगा तब तक ये युद्ध जारी रहेगा। भ्रष्टाचार व विकारों का जब तक अंत नहीं तब तक पुरुषार्थ जारी रहेगा। भाइयों दुनिया को आपमें स्वर्णिम भविष्य नजर आ रहा है। भगवान ने भी आप पर ही भरोसा किया है इसलिए यह कार्य सिर्फ और सिर्फ तुम्हें ही करना होगा। इसलिए उठो, जागो, अपने आत्मविश्वास को जगाओ, अपने व्यर्थ विचारों व नाउम्मीदी के कारोबार को उठा लो अपने अनंत ऊर्जा के गाण्डीव को पहन लो समर्थ संकल्पों के कवच को और कूद पड़ो इस महासमर में बढ़ाओ हिम्मत का कदम छोड़ो अपनी अटूट लगन के तीर, आपके मनोबल रूपी गदा का वार खाली नहीं जायेगा। तुम चिन्ता मत करो, सारथी बनकर सर्वशक्तिमान निरन्तर तुम्हारा साथ दे रहा है। तुम बस उसकी श्रीमत रूपी शरण में रहो। अरे! कुछ ऐसा करो जो करने योग्य हो, समझने योग्य हो, अंधेरे के भय से डरकर सूरज कब तक नहीं निकलता? उसके निकलते ही अंधेरा कैसे भागता है यह आपको नहीं पता क्या? इसी प्रकार तुम जरा उठकर खड़े तो हो रास्ता अपने आप बनता चला जायेगा। बस तुम किंकर्त्तव्यविमूढ़ मत होना, रूकना नहीं, ठहरना नहीं, पीछे की ओर मुड़ना नहीं, दिलशिकस्त हो हारना नहीं, तुम्हें बस विजयी ही बनना है। तुम्हें अभिमन्यु नहीं अर्जुन बनना है, जटायु नहीं, हनुमान बनना है, अश्वत्थामा नहीं अंगद बनना है। विजय तुम्हारे से बचकर कहीं जा ही नहीं सकती। विजय तुम्हारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।

नहीं शेर कभी ढूँढ़ा करते, पद चिन्हों में अपने पथ को,
जाबाँज नहीं मांगा करते कभी किसी की रहमत को ।

हे युवा भाइयों निकाल फेंको अपनी कमजोर मानसिकता को, असफलता की कालिमा को और जगाओ अपने जिन्दादिली के सूर्य को। माया आपका कुछ नहीं कर सकती, विजय आपसे तब तक दूर नहीं जा सकती जब तक कि आपके इरादों में दम हैं विचारों में उमंग है, भावनाओं में भलाई है, दिल में करूणा है, दया है, जीवन में सच्चाई है। ये काम तुम्हारा है तुम्हें करना ही होगा और तुम ही कर सकते हो। 2500 वर्ष माया की चोट खाते खाते मानवता लहूलुहान हो चुकी है, इस पर मुक्ति का मरहम लगाना अब न सिर्फ तुम्हारा फर्ज है बल्कि अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए। इन लाचार बच्चों को, बेबस व्यसनी युवा पीढ़ी को, असमर्थ व वृद्धों को, बेजुबान प्राणियों को, विकलांग राजनीति, धारणाओं विहीन धर्म–निर्दयी आतंकवादियों को, असहाय आत्माओं को, गरीब बीमारों को, आखिर कौन बनेगा इनका सहारा? कौन करेगा इनका परिवर्तन? कौन बनेगा इनका पथप्रदर्शक, आखिर क्या होगा इनकी कर्म कहानी का? अब कोई भी महात्मा, धर्मात्मा व पुण्यात्मा नहीं सुधार सकता, अब तो सिर्फ परमात्मा ही इनका सहारा बन सकता है और बदल सकते हो तुम इनकी जीवन कहानी को बन सकते हो तुम इनके रहनुमा, दिखा सकते हो इन्हें मंजिल, आखिर तुम्हें किसका इन्तजार है, तुम्हारे सिवा अब इनका कोई मसीहा बनने वाला नहीं आखिर तुम क्यों सोच रहे हो? और क्या सोच रहे हो? तुम क्यों किसी की प्रतीक्षा कर रहे हो? अरे और कौन आयेगा जो यह आपका कार्य करेगा। यह कार्य बिना तुम्हारे संभव ही नहीं। इसलिए उठो और बढाओं अपने मजबूत हाथ और थाम लो उन्हें जो निरीह व कातर नजर से तुम्हारे इन्तजार में है और बुलन्द आवाज में कह दो इस जहान से कि अब हम जग गये हैं और बता दो उन्हें जो लगभग निष्प्राण हो चुके है कि तुम चिन्ता मत करो अब हममें स्फूर्ति आ गयी है और सचेत कर दो माया को कि अब बहुत हो चुका तुम्हारा आतंक, अब तुम्हारी खैर नहीं। अब तुम्हें जाना ही होगा क्योंकि अब हम संभल चुके हैं और याद आ गई है हमें हमारी शक्तियाँ और हमारा साथ दे रहा है स्वयं सर्वशक्तिमान परमात्मा, अब तुम्हारे धोखे में कोई आ नहीं सकता क्योंकि अब हमारी तीसरी आँख खोल दी है भगवान ने। तुम्हें क्या तुम्हारे पूरे वंश को अंश सहित खत्म करके ही हम चैन लेंगे। मेरे युवा भाइयों जगत जननी के ऋण से मुक्त होने का यही समय है और यही वह समय है जब आप यह कार्य संभव कर सकते हो, सिर्फ अपने मनोबल को किसी भी हालत में कमजोर मत होने देना, धीरज कभी नहीं छोड़ना, उत्साह कभी ठंडा नहीं हो, साहस कभी टूटे नहीं आत्मविश्वास कभी खोना नहीं, हौसलें कभी शिथिल नहीं करना, उमंग कभी कम न हो, मन कभी मुझांना नहीं, बस ये कार्य हुआ ही पड़ा हैं। तुमने ये कार्य अनेक बार किया है, एक बात और जिसने भी समाज के लिए कुछ किया या कोई बड़ी क्रान्ति लानी हुई तो उसमें उसको अपना इन्द्रिय सुख व स्वार्थ छोड़ना पड़ा है, बिना इस त्याग के कुछ भी विशाल कार्य नहीं हो सकता और सामाजिक चेतना क्रान्ति तब तक नहीं संभव जब तक कि आध्यात्मिक क्रान्ति का बिगुल नहीं बजायेगें। छल, दम्भ और पाखण्ड समाप्त हो जायेगा जब नैतिकता के बल से उसका सामना करते हैं। इसलिए अपने निजी स्वार्थ व सुखों का त्याग कर तपोबल व मनोबल के द्वारा सुखमय संसार बनाना यही एक मंजिल, यही एक लगन जो आपको अग्नि रूप में प्रखर रखनी है। मेरे भाइयों हम सबको आप पर सिर्फ आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है व हम सबको इन्तजार है कि आप इस पुनीत कार्य का बीड़ा अवश्य उठायेगें न सिर्फ आप बीड़ा उठायेगें बल्कि इस कार्य को पूरा करना होगा और आप इस कार्य को अवश्य पूरा करेगें। ओमशान्ति।

ब्रह्माकुमारी सुमन बहन,
अलीगंज,लखनऊ।